

गुरु तेग बहादुर

प्रलिस के लयः

सखि धरु के गुरुओं से संबधति तथु

मेनुस के लयः

सखि धरु में गुरु तेग बहादुर का महतुतु एवं उनके युगदान

चरुा में कुयों?

हाल ही में शुरी गुरु तेग बहादुर जी का शहादत दविस मनाया गया ।

परुुख बढु

■ गुरु तेग बहादुर (1621-1675):

- गुरु तेग बहादुर नौवें सखि गुरु थे, जनुहें अकुसर सखिों दुरा 'मानवता के रकुषक' (शुरीषुट-दी-चादर) के रूड में याद कुया जाता था ।
- गुरु तेग बहादुर एक महान शकुषक के अलावा एक उतुकृषुट युदुधा, वचुरारक और कुर्वा भी थे, जनुहोंने आधुयातुमकु, ईशुवर, मन और शुरीर की परुकृती के वषुय में वसुतुतु वरुणन कुया ।
- उनके लेखन कुु पवतुिर गुरंथ 'गुरु गुरंथ साहबु' (Guru Granth Sahib) में 116 कावुयातुमक भजनों के रूड में रखा गया है ।
- ये एक उतुसाही यातुरी भी थे और उनुहोंने पूरे भारतीय उपमहादुवीड में उपदेश कुंदर सुथापति करने में महतुतुवपूरुण भूडकुा नभुाई ।
- इनुहोंने ऐसे ही एक मशुिन के दुरीरान पंजाब में चाक-नानकी शहर की सुथापना की, कुु बाद में पंजाब के आनुदपुर साहबु का हसुसा बन गया ।
- गुरु तेग बहादुर कुु वरुष 1675 में दलुलुी में मुगल सुडुराट औरंगजुुब के आदेश के बाद मार दया गया ।

■ सखि धरु

- पंजाबी भाषा में 'सखि' शबुद का अरुथ है 'शषुय' । सखि भगवान के शषुय हैं, कुु दस सखि गुरुओं के लेखन और शकुषाओं का पालन करते हैं ।
- सखि एक ईशुवर (एक ओंकार) में वशुवास करते हैं । सखि अपने पंथ कुु गुरुडत (गुरु का मारुग- The Way of the Guru) कहते हैं ।
- सखि परंपरा के अनुसुार, सखि धरु की सुथापना गुरु नानक (1469-1539) दुरा की गई थी और बाद में नुु अनुय गुरुओं ने इसका नेतुतुव कुया ।
- सखि धरु का वकुास भकुती आंदुलन और वैषुणव हदुी धरु से परुभावतुि था ।
- इसुलामकु युग में सखिों के उतुपीडुन ने खालसा की सुथापना कुु परेरतुि कुया कुु अंतरातुमा और धरु की सुवतंतरुता का पंथ है ।
- गुरु गुवदुि सहुि ने खालसा (जसुका अरुथ है 'शुदुध') पंथ की सुथापना की कुु सैनकु-संतुु का वशुषुडुतु सुडुह था ।
- खालसा (Khalsa) परुतबुदुधता, सुडुरुपण और सामाजकु ववुक के सरुवुओओ सखि गुणुु कुु उजागर करता है तथा ये पंथ की पाँओ नरुधरतुि भुुतकु वसुतुओं कुु धारण करते हैं, कुु हैं:
- केश (बनुा कटे बाल), कंघा (लकडुी की कंघुी), कडुा (एक लुुहे का कंगन), कओषुा (सुुती जांघया) और कृपाण (एक लुुहे का खंजर) ।
- यह उपदेश देता है कुु वुभनुन नसुल, धरु या लुग के लुग भगवान की नजुर में सुमान हैं ।

■ सखि साहतुयः

- आदुगुरंथ कुु सखिों दुरा शाशुवतु गुरु का दरुजा दया गया है और इसुी कारण इसुे 'गुरु गुरंथ साहबु' के नाम से जाना जाता है ।
- दशम गुरंथ के साहतुयकु कारुय और रचनाओं कुु लेकर सखि धरु के अंदर कुुओ संदेह और ववुाद है ।

सखि धरु के दस गुरु

गुरु नानक देव (1469-1539)

- ये सखिों के पहले गुरु और सखि धरु के संसुथापक थे ।
- इनुहोंने 'गुरु का लंगर' की शुरुआत की ।
- वह बाबर के सुडुकालीन थे ।

	<ul style="list-style-type: none"> ■ गुरु नानक देव की 550वीं जयंती पर करतारपुर कॉरडोर को शुरू किया गया था।
गुरु अंगद (1504-1552)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने गुरुमुखी नामक नई लिपि का आविष्कार किया और 'गुरु का लंगर' प्रथा को लोकप्रिय बनाया।
गुरु अमर दास (1479-1574)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने आनंद कारज वविह (Anand Karaj Marriage) समारोह की शुरुआत की। ■ इन्होंने सखियों के बीच सती और परदा व्यवस्था जैसी प्रथाओं को समाप्त कर दिया। ■ ये अकबर के समकालीन थे।
गुरु राम दास (1534-1581)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने वर्ष 1577 में अकबर द्वारा दी गई ज़मीन पर अमृतसर की स्थापना की। ■ इन्होंने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर (Golden Temple) का निर्माण शुरू किया।
गुरु अर्जुन देव (1563-1606)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने वर्ष 1604 में आदिग्रंथ की रचना की। ■ इन्होंने स्वर्ण मंदिर का निर्माण पूरा किया। ■ वे शाहदीन-दे-सरताज (Shaheeden-de-Sartaj) के रूप में प्रचलित थे। ■ इन्हें जहाँगीर ने राजकुमार खुसरो की मदद करने के आरोप में मार दिया।
गुरु हरगोबदि (1594-1644)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने सखि समुदाय को एक सैन्य समुदाय में बदल दिया। इन्हें "सैनिकि संत" (Soldier Saint) के रूप में जाना जाता है। ■ इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना की और अमृतसर शहर को मज़बूत किया। ■ इन्होंने जहाँगीर और शाहजहाँ के खिलाफ युद्ध छेड़ा।
गुरु हर राय (1630-1661)	<ul style="list-style-type: none"> ■ ये शांतिप्रिय व्यक्ति थे और इन्होंने अपना अधिकांश जीवन औरंगज़ेब के साथ शांति बनाए रखने तथा मशिनरी काम करने में समर्पित कर दिया।
गुरु हरकशिन (1656-1664)	<ul style="list-style-type: none"> ■ ये अन्य सभी गुरुओं में सबसे कम आयु के गुरु थे और इन्हें 5 वर्ष की आयु में गुरु की उपाधि दी गई थी। ■ इनके खिलाफ औरंगज़ेब द्वारा इस्लाम विरोधी कार्य के लिये सममन जारी किया गया था।
गुरु तेग बहादुर (1621-1675)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने आनंदपुर साहबि की स्थापना की।
गुरु गोबदि सहि (1666-1708)	<ul style="list-style-type: none"> ■ इन्होंने वर्ष 1699 में 'खालसा' नामक योद्धा समुदाय की स्थापना की। ■ इन्होंने एक नया संस्कार "पाहुल" (Pahul) शुरू किया। ■ वह बहादुर शाह के साथ एक कुलीन के रूप में शामिल हुए। ■ ये मानव रूप में अंतिम सखि गुरु थे और इन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहबि' को सखियों के गुरु के रूप में नामित किया।

स्रोत: पी.आई.बी.